North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

IRJIF IMPACT FACTOR:6.019

ISSN: 2454-2326 Vol. 7, Issue-4 April -2021

Index Copernicus Value: 58.12 DOI NUMBER: 10.5948/2454-2326.2020.00008.0 Thomson Reuters ID: S-8304-2016

मालवा की लोक पहेलियों में सामाजिक चेतना के स्वर

डॉ. प्रियंका नाग

लोक–पहेलियाँ, लोक–साहित्य के विभिन्न विशिष्ट अंगों में से एक अंग है जिसमें मुख्य आंचलिक समाज का वास्तविक चेहरा प्रतिबिंबित होता है। इसलिए आंचलिक लोक–साहित्य को विशिष्ट साहित्य से परे नहीं आंका जा सकता क्योंकि विशिष्ट साहित्य बगैर ऑचलिक लोक–साहित्य के समृद्धि नहीं पा सकता। दुनिया के साहित्य की समृद्धि में स्थानीय लोक–साहित्य की महती भूमिका होती हैं। कहा भी गया है ष्साहित्य समाज का दर्पण होता हैष् और इस दर्पण में ऑचलिक समाज प्रतिबिंब न होतो ऐसा संभव नहीं क्योंकि समाज शब्द अपने आप में व्यापकता लिए हुए है।

लोक–पहेलियों ने प्राचीन समय से आज तक समाज को सामाजिक समरसता, सद्भाव, स्नेहभाव और बौद्धिक कौशलों आदि वृतियों की विकास प्रक्रिया को जीवित रखने में अकल्पनीय योगदान दिया है। सामाजिक संदर्भों को प्रदर्शित करने में लोक–पहेलियों की भूमिका विशिष्ट रही हैं।

एक समय था जब लोक–पहेली, लोक–साहित्य, लोक–कथा और किस्से–कहानियाँ तथा नुक्कड़ नाटक, लोक रंजन के मुख्य साधन हुआ करते थे। संध्या वंदन के पश्चात् लोग चौबारों–चौपालों की तरफ बड़े चाव से सुनने–सुनाने खींचे चले आते थे। ना जाति भेद न लिंग भेद और ना ही आयु का बंधन, सभी एक जगह, लोक–पहेली, लोक–साहित्य, लोक कथा, और किस्से–कहानियों तथा नुक्कड़ नाटकों के द्वारा समरसता, सद्भाव, स्नेहभाव और बौद्धिक कौशलों के विकास की शिक्षा ग्रहण करते थे।

सामजिक परम्परा गौना और विवाह के शुभ अवसरों पर अपनी परम्परा के मुताबिक अपने बारातियों और समधियों के लिए पहेलियाँ और पहेलियों में गारी या गाली का अद्भुत समायोजन मालवा की पहेलियों में सहज ही देखने को मिल जाता है। इसलिए समाज में प्रचलित परम्पराएँ, रिश्ते–नाते, पहनावे, सद्भाव, जनपदीय, देवी–देवता और वैदिक देवी–देवताओं के प्रति आस्थाओं पर सृजित लोक पहेलियाँ हमें सामाजिक संदर्भों से जोड़ती हैं। सामाजि संदर्भों से जोड़ती कुछ संदर्भों के साथ निम्न पहेलियाँ दृष्टव्य हैं–

पुत्री का माता–पिता से प्रगाढ़ रिश्ता होता है । पुत्री गोद का वह मोती होता है, जिसका माता–पिता के सेवा और अपने परिवार के प्रति समर्पण को भाव का रंग कभी फीका नहीं पड़ता। ससुराल जाने के बाद भी। इसकी आभा से दो पारिवारिक दुनिया प्रकाशित होती है। माता–पिता को पुत्री की बेहद चिंता होती है। निम्न पहेली में ऐसी ही चिंता माता–पिता उस वक्त करते हैं जिस वक्त दामाद के साथ अपनी पुत्री को पहली बार अपने घर से विदाई देते है अश्रुपूर्ण नम आँखों से पुत्री को निहारते हुए, अपनी पुत्री को दूध से भरा कटोरे की उपमा देते हुए कहा । हमारी बेटी दूध भरा कटोरा अर्थात् नादान है अर्थात् घर–गृहस्थी चलाने का अनुभव नहीं है, जो कि तुम्हारे हाथ में दे रहें है आपको अच्छा लगे तो रखना नही

तो वापस मेरे घर पहुँचा देना। इसमें कोई भला बुरा नहीं । यह माता–पिता की विनम्रता भरे भावों से ओत–प्रोत पहेली

दूधा भर्यो बाटको, जियो जमई का हाथ ।
भावे तो पी लीजो, नी तो पाछो दो पोचाय।

माता–पिता की भक्ति का पाठ श्रवण कुमार की कथा अब भी पढ़ाती है। इस कथा में समाज में सकारात्मक सोच आती है। इस निम्न पहेली में देखते ही बनता है–

दस नख तो धरती चले,
ऊपर चले नख पचास।
सुरता तम करो विचार,
बूझो हो चतर म्हारी पारसी,
नी तो हारो घर की नार

मान–सम्मान, मर्यादा और लज्जा की परम्परा भारतीय सभ्यता के मूल में प्राचीन समय से ही रही हैं लोक संस्कृति इस को समृद्ध करती आई है। पाश्चात्य

संस्कृति धीरे–धीरे इस भारतीय संस्कृति को निगलती जा रही हैं । अब यह शहरी कम परन्तु ग्राम्यांचल में अधिक देखने को मिलती हैं ।

महिलाएं अपने पीहर के पुरूषों को छोड़, अपनों से सभी पुरूषों से लज्जा करने के लिए अपने चेहरे पर साड़ी का पल्लू डाल लेती हैं जिसे मालवा की लोक बोली में ष्छेवड़ा लेनाष या मूँह ढकना कहा जाता है। इसी छवड़े को लोक पहेली ने जिंदा रखा है। अर्थात् भारतीय स्त्रियों के संस्कारों की परम्परा को रेखांकित किया है देखें पहेली– ष्सबको ले पण, बाप को नी ले ।'' अर्थात् सभी का छेवड़ा (लज्जा भरा घूघट) करती हैं। ऐसी अनेकों पहेलियाँ लोक में विद्यमान हैं जो हमें सामाजिक संदर्भों से जोड़ती हैं।

रक्षाबंधन भारत के सनातनी परम्परा का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। यह निमाड़ी पहेलियों के माध्यम से शोध का एक महत्वपूर्ण विषय बनकर हमारे सामने प्रस्तुत होता है। रक्षाबंधन का जो त्यौहार भाई बहन के स्नेह पवित्र का प्रतीक है। अपने भाई को जब बहन राखी बाँधने जाती है। वैसे ही पहेलियों में जिज्ञासा है

बहन अपने पैर कहाँ रखती है।
धरती की आरती चाँद सूरज का दिया।
भाई की बईण पूजण चली वॉय कॉय पड़ दिया।
इसका उत्तर हैं ''हवा''

जब कभी किसी लड़की के माता–पिता काम करने गये हैं । तब कोई व्यक्ति जब कभी किसी लड़की से पूछता है कि तुम्हारे माता–पिता कहाँ गये हैं, और तुम क्या कर रही हो। तो लड़की उत्तर पहेली में देती है और कहती है

'म्हारो बाप सरग को पणी लिवानऽ ग्योज ।
म्हारी माय एक–एक का दो करन ऽगईज'
न ' हॉऊ सोन्ना क चाँदी में ढालई रईज'।

मतलब यह है कि लड़की के पिता कवेलु चालने छप्पर छाने गया था और लड़की की माता अरहर (तुअर दाल) की दाल बनाने गई थी और वह खुद लड़की स्वयं धान से चावल बना रही थी

पाल लावजे फूल लावजे अरू लावजे काकड़ी । म्हारा पैसा पाछा लावजे अरू लावजे लाकड़ी पाना लाना, फूल लाना और उसके साथ में ककड़ी भी लाना तथा ककड़ी के साथ ही लकड़ी भी लाना, पैसा एक भी खर्च नहीं करना, मेरे पैसे भी पूरे वापस लाना।

जब रसो सो कुवो, अबकती वाड़ी
ढोर ढंकर पाणी पे पंछी से पाणी नी पेवाय।

कुएँ में खूब पानी भरा है। बाड़ी में गाय भैंस पानी पी रही हैं। लेकिन पक्षीयों से पानी नहीं पिया जा रहा है। भावार्थ यह है कि यहाँ पर गाय भैंस के दूध की बात कही जा रही है। गाय–भैरा को दूध आता है और उसके बछड़े दूध पीते हैं। गाय

के शरीर की तुलना कुएँ से की गई है। पक्षियों को दूध नहीं आता, अतः वे पानी पीने में असमर्थ हैं। अतः पक्षियों के बच्चे अन्न कण खाते है अपना पेट पालते हैं।

उत्तर :– माँ का दूध ।

नीलई गोटी, हिन्दल 5 बठी।
ल रे सगा थारी बेटी।।
हरी हरी गोरी की तरह जो हवा में झूले पर झुल रही है। हे सगे
समधियों लो तुम्हारी बेटी को लो, ले जाओ।

उत्तर :– कच्ची केरी जो पेड़ पर लटकी है ।

एक कटोरी रूपया, थारा सी भी नी गिणाय, नै म्हारा सी गिणाय एस कटोरी में रूपये रखे है, लेकिन उन्हें न तो तुम गिन सकते हो और ना मैं।

उत्तर :– तारों का समुह

चाचा का दुई कान, चाची का कान नी,
चाची चतुर सुजान, चाचा कऽ कई नी आवै ऽ।।
चाचा के दो कान है और चाची के कान नहीं हैं।
चाची चतुर है चाचा कुछ नहीं जानते हैं।

उत्तर :– कड़ाही और तवा

तक–तक बगल्यो, पाणीम को बगल्यो।

धरयो हाथ म न चल साथ म।।
धीमे–धीमे चलने वाले पानी में रहने वाले बगुले के हाथ में, जो साथ में चलता है

उत्तर :– लालटेन या कंडील।

सब लोग भागी गया, भोगलई राँड के छोड़ी गया।
सब लोग भाग गये और बिना कपड़े की स्त्री को कमरे में
बंद कर गये हैं।

उत्तर :–मिट्टी की कोठी

साकड़ी सी सेरी, सोन्ना की ढेरी।
एक सकड़ी सी गली में सोने का ढेर लगा है।
उत्तर :– चूल्हे में रखे अंगारे

सब लोग भाग गया घर में मऽ
उड़दीया बगलई गया। सब लोग भाग गये है,
घर में उड़द बिखेर गये है।

उत्तर :– मक्खीयाँ

सब चीज को ढाँकणा, एक चीज को ढाकणों नी।
सभी वस्तुओं को ढक्कन है, संसार में एसी कौन–सी वस्तु है, जिसका ढक्कन नहीं है।

उत्तर :– समुद्र या सागर ।

चार चक्र चल ऽ, दुई भक चल ऽ । आग 5 नाग चल 5 पाछ 5 गोप चल ऽ।।

चार भारी पहिये (चाक) चलते हैं, दो भक्र अर्थात् टुकड़े करने वाले (दाँत) चलते है। आगे नाग जा रहा है, पीछे गोप (कनखजूरा) चल रही है।

उत्तर :– हाथी (उसके विभिन्न अंगों को पहेली में कहा गया है) । एक नारी पलंग पऽ सूती, सूती–सूती अपने पति पर गूती। उसका पति अति सूख पावे, पंडित होत तो अर्थ बतावे । एक सती नारी पलंग पर सोये–सोय अपने पति पर मूत्र त्याग करती है। उसका पति आनंदित होता है। पंडित हो तो अर्थ बतावे।

उत्तर :– महादेव जी के ऊपर की जलधारी।
एक परियो रखोड़ा म लोटऽ।
एक लड़का राख में लोटता हैं।

उत्तर :– बाटी या बाफले ।

कहे गणपति सुण रहे हलपति, धरती धर किन्ने मारा।
चार खम्ब ऊपर –छत्तर मऽ छाया, छाया म ऽ नर ।
नर का बगल म ऽ नारी, नारी का मुँह म 5 नर ।।
उन्ने मारा धरणी धर ।।

हे हलवाड़े। पृथ्वी पर रहने वाले सूअर को किसने मारा ? चार खंबों के ऊपर छत है, उस पर छाया है। उस छाया में मनुष्य बैठा है, मनुष्य के बगल में एक नारी है, (गोफन) उस नारी के मुँह में एक पत्थर है,

ने सूअर को मारा है।
गोफन का पत्थर
टीटोड़ी की टॉय टॉय। तीन मनुस न ऽदस पाय ।।

आश्चर्य बात है, तीन गनुष्य है उनके दरा पैर है। चड़स अथवा गोट में दो बैल जुते होते हैं और चड़स चलाने वाला मिलकर तीन, दो बैल के आठ पैर और एक मनुष्य के दो पैर मिलकर दस पैर हो जाते है।

उत्तर :– मोट या उसका चडस

घर म ऽ ठोकी, अँगना म 5 ठोकी, ठोकम ठोक मचाई,
घर वाला न असी ठोकी पर घर ठोकवा गई ।।

कुम्हार ठोक पीटकर मटके बनाने के लिए मिट्टी तैयार करता है। मटके के छोटे रूप को पीटकर बड़ा करके आँगन में सूखने रखता है। थोड़ा सूखने के बाद में उसे पुनः पीटकर ग्राहक को बताता है। मटका बनने के बाद में बाजार में ले जाकर पीटकर ग्राहक को बताता है। ग्राहक भी मटके को बजाकर देखता है, तब खरीदता

है।

उत्तर :– मिट्टी से निर्मित गटका।

बाप जंगल म 5 माय पतंग मॅ बेटा–बेटी रंगत म 5।। पिता जंगल में हैं तथा माता पंगती में बैठी है और लड़के–लड़कियाँ घर पर हैं। पलाश का पेड़ जंगल में खड़ा रहता है, उसके पत्तों से बनाई जाने वाली पत्तल पंगती में भोजन के बाद घुरे पर फेंक दी जाती है। वहीं पलाश के फूल प्रकृति में रंगत बिखेरते हैं। बाप बउन्या कर 5 छौरों थिगल्या भर 5, नात्या– पात्या दौंड़ लगाव। पिता बैठा रहता है, पुत्र चलना सीख रहे हैं और उसके पुत्र – पुत्रियाँ घर आँगन में दौड़ लगाते हैं।

मटका, ढोल, गिलास और लौटे
नानी सी होलगी डाबरयो सो पेट
को जाजा होलगी राजाजी का देश।

होलगी (एक पक्षी का नाम) छोटी सी होती है, जिसका उदर भी छोटा सा होता है। हे होली !

तू कहाँ जा रही है? आयेंगे राणाजी तेर पेट फाड़कर भक्षण करेंगे । मुख के रास्ते तू कहीं और पहुँच जायेगी या दूसरे देशी चली जायेगी।

उत्तरः– संजोरी (गुजरिया) देखण म श्याम सुन्दर, बैठक औकी कालई।।

झाड़ ओका थमक थैया पान ओका थालई।
पेड़ उसका सुन्दर है। पत्ते उसके थाली के आकर के हैं।
देखने में वह सुन्दर हैं, पर उसका निचला हिस्सा काला है।
उत्तर :– टेसू का फूल

वाको ताको बोबल्यो, ते पर बढयो होलगो।
जो नी वार्ता ताड़, ओको बाप ढोलगो।।
टेढ़े–मेढ़े आकार का बबूल का वृक्ष है, जिस पर एक छोटा सा पक्षी होलगा बैठा है। जो मेरी पहेली का अर्थ नहीं बतायेगा, उसका पिता ढ़ोली होगा।

उत्तर :– सुपारी और सरोता।

आल्या में गोपाल्यो, झिगड़या की झांई।
बारा बरस मऽ कुंवर हुयो, ओको नाव काई।।

वह बारह वर्ष में एक बार लगता है, जिसकी धूम सारी दुनिया में होती है। उसका नाम क्या है।

उत्तर :– सिंहस्थ अथवा कुंभ का मेला।

आरती मारती टाँगड़ा फँसाडती, भोरो–भारा पाडती ।।
चक्की चलाते समय दोनों पैर चक्की के आसपास हैं। आलकी पालकी मारकर चक्की नहीं पीसी जाती है। जब चक्की चलती है, तब भूरे रंग (सफेद) का आटा गिरता है।

उत्तर :– चक्की और घट्टी

सब भाई न को एक जुग
सभी भाईयों का एक दिल है, जो एक जुट है

उत्तर :– लहसुन

आरकस बारकस, खैर को खूटो। गाय छे मारकणी दूध से मीठो। । इधर भी घर है उधर भी घर है । उस जंगल में गाय रहती है, गाय मारने वाली है, लेकिन उसका दूध बहुत मीठा है
उत्तर :– मधुमक्खी का छत्ता ।

छोवलो घोड़ा नीलई पूँछ, तूक नी आव तो थारा बाप क॰ पूछ ।। सफेद घोड़ा है जिसकी पूँछ हरे रंग की है । यदि तुम्हे इसका उत्तर नहीं आता होतो तुम्हारे पिता से पुछ लो।

इस प्रकार निमाड़ी पहेलियों भारत का पवित्र त्यौहार रक्षाबंधन को जनमानस ने अपने स्थानीय शब्दों के माध्यम से एक धागे में पिरोकर माला का रूप दिया है। ये माला अपने स्थानीय शब्दों के माध्यम से राष्ट्रीय भाषा हिन्दी में समाहित होकर भारत का स्वर्णिम इतिहास बन गई हैं।'

संदर्भ सूचि :–

1. बंशीधर बन्धु, मालवी लोक पारसी पहचान एवं प्रवाह, अप्रकाशित, पृ. 86
2. उपाध्याय कृष्णदेव, लोक–साहित्य की भूमिका, पृष्ठ 174
3. राजपुरोहित, निर्मला, मध्यप्रदेश की जनपदीय पहेलियाँ, पृ. 144
4. डॉ. श्याम परमार, मालवी लोक साहित्य पृष्ठ. 382
5. व्यक्तिगत सर्वेक्षण

डॉ. प्रियंका नाग D/o सुरेश नारायण नाग
एल.आई.जी.ए 50
ऋषि नगर एक्सटेंशन उज्जैन (म.प्र.)
मो.7898704490, 9399882729
priyankanaggoodluck@gmail.com